© UNIVERSAL RESEARCH REPORTS | REFEREED | PEER REVIEWED
ISSN : 2348 - 5612 | Volume : 09 , Issue : 02 | April - June 2022

भारत में उच्च शिक्षा में विश्वविद्यालय के पुस्तकालयों की भूमिका पर अध्ययन

[1]Poonam Rani, [2]Prof.(Dr.) Yogesh Kumar Atri

Department of Library Science

OPJS University, Churu Rajasthan (India)

सार

'विश्वविद्यालय पुस्तकालय' शब्द का उपयोग एक ऐसे पुस्तकालय का प्रतिनिधित्व करने के लिए किया जाता है जो उच्च शिक्षा संस्थान का एक अभिन्न अंग है–एक विश्वविद्यालय, जिसमें एक या अधिक कला और विज्ञान में शिक्षण और शोध किया जाता है, और जिसमें शक्ति है डिग्री, डिप्लोमा और प्रमाण पत्र प्रदान करने के लिए। पुस्तकालय अनिवार्य रूप से एक सेवा संस्थान है। विश्वविद्यालय पुस्तकालय भी ऐसा ही है। पुस्तकालय विश्वविद्यालय का हृदय होता है। विश्वविद्यालय पुस्तकालय परिसर में सबसे महत्वपूर्ण इकाइयों में से एक है। यह शिक्षण, अनुसंधान और विस्तार कार्यक्रमों की सुविधा प्रदान करता है। आधुनिक स्थापत्य सिद्धांतों पर निर्मित कार्यात्मक संरचना के साथ केंद्रीय स्थान पर पुस्तकालय का अपना स्थान बनाने में सक्षम बनाने के लिए हर संभव प्रयास किया जा रहा है। सभी छात्र, शिक्षक, शोधार्थी, प्रशासनिक कर्मी, विश्वविद्यालय पुस्तकालय आज उच्च शिक्षा में एक बहुत ही महत्वपूर्ण घटक है। पुस्तकालय प्रणाली की बहुत बड़ी जिम्मेदारी होती है। पुस्तकालय न केवल कक्षा के अध्ययन का पूरक है बल्कि अनुसंधान में भी सहायता करता है।

मुख्य शब्दः– विश्वविद्यालय, पुस्तकालय और विज्ञान।

महिलाओं के लिए उच्च शिक्षा का महत्व

उच्च शिक्षा– ''महिलाओं के लिए वरदान''

1948 में डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन की अध्यक्षता में विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग ने महिलाओं के लिए शिक्षा की स्थापना की थी। महिला शिक्षा के संबंध में आयोग ने सुझाव दिया कि महिला महाविद्यालयों और विश्वविद्यालयों को वही सुविधाएं प्रदान की जाएं जो पुरुष महाविद्यालयों और विश्वविद्यालयों को प्रदान की जाती हैं। महिलाओं और नागरिकों दोनों को ध्यान में रखते हुए उनके लिए भी पाठ्यक्रम तैयार किया जाना चाहिए।

- एक लड़के को शिक्षित करना एक व्यक्ति को शिक्षित करना है... एक लड़की को शिक्षित करना एक राष्ट्र को शिक्षित करना है'
- शिक्षा सबसे महत्वपूर्ण शक्ति है जो मानव जीवन को आकार देती है। यह एक महिला को सशक्त बनाता है।

भारत सहित दुनिया भर के अधिकांश विकासशील देशों में सोचने, तर्क करने, उचित निर्णय लेने और अपनी रक्षा करने की क्षमता के साथ। महिलाओं को अक्सर शैक्षिक अवसरों से वंचित किया जाता है। प्रत्येक महिला विश्व के लिए सार्थक योगदान दे सकती है और कर सकती है। यह मान्यता बढ़ती जा रही है कि महिला सशक्तिकरण और नेतृत्व उनकी अपनी उन्नति और विश्वव्यापी सामाजिक परिवर्तन के लिए महत्वपूर्ण हैं। इसलिए, उच्च शिक्षा ने हमेशा महिलाओं के बौद्धिक और सामाजिक विकास और स्वतंत्रता का समर्थन और समर्थन किया है।

उच्च शिक्षा एक महिला को ''पूर्ण जीवन'' की ओर ले जाती है:

आत्म सशक्तिकरण: शिक्षा आत्म सशक्तिकरण है, खासकर महिलाओं के लिए। अच्छी शिक्षा प्राप्त करना समाज में किसी को भी सशक्त बनाता है। भारत में महिलाओं के लिए यह बहुत जरूरी है। यह उसे खुद की ताकत के बारे में जागरूक होने और किसी भी स्थिति में खुद की देखभाल करने में मदद करता है। यह उसे समाज में रहते हुए और ज्ञान के माध्यम से अपने बारे में जागरूक होने में भी मदद करता है। वह एक इंसान के रूप में अपने संभावित गुणों को बेहतर ढंग से समझ पाएगी और शिक्षा उसे गुप्त प्रतिभा में शीर्ष पर पहुंचने में मदद करेगी और उसे अपने कौशल को तेज करेगी।

वित्तीय स्थिरता: एक शिक्षित महिला को पर्याप्त शैक्षणिक योग्यता प्राप्त होगी ताकि वह अपना रोजगार, नौकरी पाने में सक्षम हो, पैसे की सच्चाई का एहसास हो सके। शिक्षित महिलाएं स्वतंत्र होंगी और कई वित्तीय सहायता से मुक्त होंगी। और वह इस बात पर गर्व करेगी कि किसी के लिए भी बाध्य होना चाहिए।

व्यक्तिगत आकांक्षा में वृद्धि: उच्च शिक्षा के साथ, एक महिला के पास पर्याप्त व्यावहारिक अनुभव होगा जो उसे अपने इच्छित रोजगार के लिए उपयुक्त उम्मीदवार बनने की अनुमति देता है।

नौकरी दक्षता पर: एक योग्य महिला को नियोक्ता के समय और धन के हिस्से के रूप में अधिक निवेश की आवश्यकता नहीं होती है। उसे संगठन से बहुत कुछ सीखने की आवश्यकता नहीं है या संगठन को उसे कार्यस्थल पर कार्य करने और कार्य करने के विभिन्न तरीकों पर व्यापार के गुर सिखाने की आवश्यकता नहीं है।

भारत में उच्च शिक्षा में विश्वविद्यालय के पुस्तकालयों की भूमिका

पुस्तकालय विचारों के वर्तमान आदान–प्रदान का एक माध्यम है, न कि केवल समाप्त एकत्रित ज्ञान के लिए जिसे भावी पीढ़ी के लिए अविनाशी रूप से स्थापित किया जाना है। पुस्तकालय एक सेवा संस्थान है। पुस्तकालय सेवाएं आधुनिक दुनिया में सबसे व्यापक रूप से उपयोग और स्वीकृत में से एक हैं। अकादमिक समुदाय, विशेष रूप से, एक विश्वविद्यालय में अनुसंधान और शिक्षण उद्देश्यों के लिए पुस्तकालय सेवाओं का उपयोग करता है। शैक्षणिक कार्य पुस्तकालय द्वारा समर्थित है। इसलिए, पुस्तकालय को एक अकादमिक संस्थान का दिल माना जाता है।

वर्तमान परिदृश्य में, छात्रों और अन्य संकायों के स्वतंत्र सीखने और निर्णय लेने के लिए पुस्तकालय सबसे महत्वपूर्ण हैं, जिन्हें कक्षा शिक्षण के अलावा अधिक से अधिक जानकारी और ज्ञान की आवश्यकता होती है जो उनके अध्ययन, और अनुसंधान और उनके करियर का समर्थन करते हैं। आधुनिक विश्व में विश्वविद्यालय पुस्तकालयों को बहुत अधिक कीमत और नगण्य अनुदान पर लोगों और विषयों की सूचना संख्या की विभिन्न मांगों का सामना करना पड़ रहा है।

महिला विश्वविद्यालय के उपयोगकर्ताओं को अन्य सामान्य विश्वविद्यालयों से जो अलग करता है, वह केवल महिलाओं के वातावरण के लिए एक निर्विवाद प्रतिबद्धता है, अकादमिक उत्कृष्टता का प्रचार और मान्यता, भलाई और सामुदायिक जुड़ाव पर एक उद्देश्यपूर्ण फोकस, और महिला विश्वविद्यालय में जीवन से परे कैरियर के अवसरों के लिए एक संरचित तैयारी।

पुस्तकालय महत्व और उपयोगिता

मानव सभ्यता की कहानी से पता चलता है कि पुस्तकालय सभ्य समाज के आवश्यक अंग के रूप में सदैव विद्यमान रहे हैं। इनका उद्भव समाज की आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु हुआ है और इनका स्वरूप, उद्देश्य, कार्य और सेवाएँ, समाज की आवश्यकताओं दारा निर्णीत होती हैं। पुस्तकालयों ने समाज के सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक विकास में महती भूमिका अदा की है। संस्कृति के संरक्षण और प्रगति, औपचारिक और अनौपचारिक स्वशिक्षा, मनोरंजन आदि में पुस्तकालयों का योगदान महत्वपूर्ण रहा है। समय की गति के साथ ज्ञान के संचरण के महत्व में सतत वृद्धि हो रही है। पुस्तकालय ज्ञान के परिसंचरण से सम्बन्धित है।

पुस्तकालय को इस प्रसंग में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करना है क्योंकि ज्ञान अधिक जटिल होता चला जा रहा है और ज्ञान संचरण के साधन भी अधिक जटिलता प्राप्त कर रहे हैं। पुस्तकालय एक सामाजिक जन संस्था है जो निरन्तर समाज कल्याण में रहते हुए ज्ञानी और अज्ञानी को समान रूप से ज्ञान वितरित करती है। यह ज्ञान के प्रसारण, विद्वता की प्रगति और शिक्षा तथा अनुसंधान की वृद्धि की संस्था है। भारतवर्ष में विद्या दान की बड़ी महिमा है। हमारे पूर्वजों ने इसको सब दानों से श्रेष्ठ दान माना है।

पुस्तकालय वास्तव में विद्या के भण्डार हैं। जन पुस्तकालयों को 'लोक विश्वविद्यालयों' की संज्ञा दी जाती है जिसके द्वार प्रत्येक व्यक्ति के लिये सदैव खुले रहते हैं और उसकी ज्ञान पिपासा शांत करते हैं। यह जन साधारण को आजीवन स्वशिक्षा प्राप्त करने में सहायक सिद्ध होते हैं। कोई भी व्यक्ति किसी विद्यालय, महाविद्यालय अथवा विश्वविद्यालय में शिक्षा प्राप्त नहीं कर सकता, किन्तु वह पुस्तकालय का सदस्य बनकर जीवन पर्यन्त अपना ज्ञान संवर्द्ध अवश्य कर सकता है।

महिलाओं के बीच उच्च शिक्षा प्रदान करने में महिला विश्वविद्यालय के पुस्तकालयों की भूमिका

एक पुस्तकालय में सूचना के स्रोतों का संग्रह होना चाहिए और इसी तरह के संसाधनों को एक परिभाषित समुदाय के लिए सुलभ बनाया जाना चाहिए। पुस्तकालय में सूचना के स्रोत का संग्रह मूल संस्था के उद्देश्य को पूरा करना चाहिए। महिलाओं के लिए अलग विश्वविद्यालय स्थापित करने का उद्देश्य राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर के साहित्य या संदर्भ स्रोतों सहित ग्रंथों के रूप में सूचना, ज्ञान और संसाधन प्रदान करना है, और उन्हें डिजिटल मीडिया के माध्यम से प्रदान करना है, विशेष रूप से महिलाओं को, ताकि उन्हें कई के बारे में शिक्षित किया जा सके। पहलू जिससे वे सामाजिक और बौद्धिक रूप से लाभान्वित होते हैं, ऐसे संग्रह में शामिल हैं–

- शारीरिक और स्वास्थ्य पहलू
- मनोवैज्ञानिक पहलू
- सामाजिक पहलू
- शैक्षिक और कैरियर पहलू
- प्रेरक और आध्यात्मिक पहलू

सामान्य विश्वविद्यालयों में महिलाओं को कम महत्व दिया जाता है और वे उन्हें सशक्त बनाने और उन्हें स्वतंत्र रूप से, दृढ़ता और आत्मविश्वास से दुनिया का सामना करने में मदद करने के लिए उनकी जरूरतों को पूरा करने के लिए विशेष रूप से आवश्यक जानकारी और ज्ञान प्राप्त करने के लिए अधिकतम संसाधन और अवसर प्रदान करने में विफल रहती हैं। एक महिला विश्वविद्यालय की स्थापना और पुस्तकालयों के माध्यम से संसाधन प्रदान करने का मुख्य उद्देश्य महिलाओं को स्वतंत्र रूप से, जानबूझकर, स्वस्थ और शांति से जीना है क्योंकि महिला शिक्षा और सशक्तिकरण परिवार के सभी सदस्यों को प्रभावित करता है, और यह गरीबी उन्मूलन में मदद करता है, और बदले में प्रभावित करता है राष्ट्र का विकास।

महिलाओं के ज्ञान और सूचना की जरूरतों को पूरा करने के लिए, महिला विश्वविद्यालय में पुस्तकालय में सभी संभव राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर के साहित्य, पत्रिकाओं और महिलाओं से संबंधित पत्रिकाओं को प्रिंट और डिजिटल रूपों में रखना चाहिए और सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि उन्हें मुफ्त में उपलब्ध कराना चाहिए। पुस्तकालय में अद्यतन जानकारी प्राप्त करने के लिए डिजिटल मोड तक पहुंच की लागत। इसलिए, इसे इंटरनेट सुविधा प्रदान करनी चाहिए, जो डिजिटल अनुप्रयोगों की एक विस्तृत श्रृंखला के उपयोग का समर्थन करती है। इसके अलावा, उन्हें ज्ञान की प्यास का मुकाबला करने के लिए उपलब्ध कराए गए संसाधनों का उपयोग करने के लिए प्रशिक्षित करना चाहिए।

महिलाओं की सभी आवश्यकताओं के बारे में हमारी चर्चा और महिला विश्वविद्यालय पुस्तकालयों के माध्यम से उन्हें पूरा करने के लिए, इसलिए पुस्तकालय उपरोक्त सभी पहलुओं को कवर करने के उद्देश्य से सभी जानकारी प्रदान करने की स्थिति में होना चाहिए।

शारीरिक और स्वास्थ्य पहलू: चूंकि किसी व्यक्ति का शारीरिक और स्वस्थ जीवन सबसे महत्वपूर्ण है, इसलिए सभी संभावित चिंताओं और अविश्वासों से बचने के लिए महिलाओं को अपने शारीरिक शरीर रचना विज्ञान, शारीरिक पहलुओं, शरीर और दिमाग के कामकाज के बारे में बहुमूल्य ज्ञान प्राप्त करना चाहिए। महिलाओं को सामान्य रूप से स्वास्थ्य संबंधी पहलुओं के बारे में ज्ञान प्राप्त करना चाहिए ताकि छोटे स्वास्थ्य संबंधी मुद्दों का ध्यान रखा जा सके और अनुशासित जीवन व्यतीत करें। महिला विश्वविद्यालय के पुस्तकालय को इन पहलुओं के संबंध में अधिक से अधिक संसाधन उपलब्ध कराने चाहिए, क्योंकि यह सामान्य विश्वविद्यालय पुस्तकालय में शायद ही न्यूनतम है।

उदाहरणः जर्नल ऑफ विमेन हेल्थ फिजिकल थेरेपी, ओएमआईसीएस इंटरनेशनल द्वारा महिला स्वास्थ्य देखभाल जर्नल, महिला स्वास्थ्य मुद्दे (डब्ल्यूएचआई), महिला स्वास्थ्य जर्नल, महिला स्वास्थ्य जर्नल, मुद्दों और देखभाल (जेडब्ल्यूएचआईसी) इत्यादि। महिला स्वास्थ्य जैसी पत्रिकाएं प्रकाशित की गईं हर्स्ट।

मनोवैज्ञानिक पहलू: महिलाओं का मनोविज्ञान पुरुषों से बिल्कुल अलग होता है। अपने करियर के समर्थन से समाज में स्वतंत्र और आत्मविश्वास से खड़े होने के लिए महिलाओं को शांतिपूर्ण और सामान्य मनोवैज्ञानिक स्वास्थ्य होना चाहिए, मनोवैज्ञानिक विकारों के बारे में जानना चाहिए। महिलाओं के मनोवैज्ञानिक ज्ञान की जरूरतों को पूरा करने के लिए एक महिला पुस्तकालय को साहित्य, पत्रिकाएं, समाचार पत्र, संबंधित पुस्तकें आदि प्रदान करनी चाहिए। महिला विश्वविद्यालय के पुस्तकालय को मुख्य रूप से महिला मनोविज्ञान पर विशेष रूप से प्रिंट संसाधन और ई–संसाधन प्रदान करने पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए।

उदाहरणः महिलाओं का मनोविज्ञान तिमाही, नारीवाद और मनोविज्ञान, लिंग और समाज।

सामाजिक पहलू: शिक्षा की हर विधा का उद्देश्य मुख्य रूप से एक व्यक्ति को सर्वोत्तम सामाजिक जीवन प्रदान करना है। चूंकि महिलाएं घर और समाज की बेहतरी में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं, जो बड़े पैमाने पर राष्ट्र के विकास को प्रभावित करती है, पुस्तकालयों को उन्हें ज्ञान के स्तर पर मजबूत करने में मदद करनी चाहिए, 1) कानूनी पहलू 2) मौलिक अधिकार और कर्तव्य पहलू 3) महिला आरक्षण 4) सरकारी और गैर–सरकारी संस्थान जैसे एनजीओ आदि महिलाओं की मदद और उन्हें सशक्त बनाने के लिए काम कर रहे हैं। यद्यपि महिला किसी महिला विश्वविद्यालय से सीखती है, उसे जीवन भर एक सामान्य समाज में रहना चाहिए, और एक सम्मानजनक सामाजिक जीवन जीने के लिए उसे उपरोक्त सभी पहलुओं से अवगत होना चाहिए।

उदाहरणः जेंडर एंड सोसाइटी, वायलेंस अगेंस्ट वूमेन, वूमेन एंड क्रिमिनल जस्टिस, जर्नल ऑफ वीमेन, पॉलिटिक्स एंड पॉलिसी जैसी पत्रिकाएं।

शैक्षिक और करियर पहलू: जैसे–जैसे दुनिया प्रतिस्पर्धी और अधिक जटिल होती जा रही है, प्रभावी शिक्षा प्राप्त करना/ प्रदान करना किसी के जीवन का प्रमुख हिस्सा है। एक महिला विश्वविद्यालय में, पुस्तकालय सभी को प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

महिला उपयोगकर्ताओं को पाठ्य पुस्तकों, संदर्भों, पत्रिकाओं, ग्रंथ सूची, ई–संसाधनों आदि के रूप में अद्यतन शिक्षा सामग्री जिसके माध्यम से एक महिला कक्षा शिक्षण के अलावा विषयवार जानकारी प्राप्त कर सकती है, और अपनी सोच और अनुप्रयोग कौशल को व्यापक बना सकती है। राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर के अध्ययन/शिक्षा मानदंडों का सामना करना। पुस्तकालय को सभी आवश्यक कैरियर उन्मुख जानकारी, दुनिया भर में उपलब्ध अवसरों की विस्तृत श्रृंखला प्रदान करनी चाहिए, क्योंकि शैक्षिक प्रणाली का मुख्य उद्देश्य छात्र को कैरियर के पहलुओं के लिए सर्वोत्तम कैरियर अवसर प्रदान करना है, इसलिए पुस्तकालय को अद्यतन साहित्य, नौकरी प्रदान करनी चाहिए।

प्रेरक और आध्यात्मिक पहलू: जीवन में बड़ी चीजें हासिल करने के लिए, प्राप्तकर्ताओं से प्रेरणा सबसे महत्वपूर्ण है। इसलिए, महिला शिक्षार्थियों के लिए, पुस्तकालय को यह प्रदान करना चाहिएः 1) लाइव साक्षात्कार की व्यवस्था करना, 2) रिकॉर्ड किए गए साक्षात्कार, 3) पुस्तकों और वृत्तचित्रों के रूप में प्राप्तकर्ताओं की आत्मकथाएँ, 4) उनके कार्यों, संघर्षों और उपलब्धियों के बारे में पुस्तकें। इससे शिक्षार्थियों को महान महिला से अपने जीवन को प्रबुद्ध करने और अपने स्वयं के पथ बनाने के लिए विचार प्राप्त करने में मदद मिलेगी। चूंकि आध्यात्मिक पहलू समाज के जीवन को डिजाइन करने में एक प्रमुख भूमिका निभाते हैं, इसलिए प्रत्येक व्यक्ति को दुनिया पर आध्यात्मिकता के प्रभाव के बारे में पता होना चाहिए। पुस्तकालय को आध्यात्मिकता और आध्यात्मिक शिक्षा के संबंध में संसाधन उपलब्ध कराने चाहिए। पुस्तकालय में राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर के आध्यात्मिक कार्यों का संग्रह होना चाहिए। उदाहरणः महिला इतिहास समीक्षा पत्रिका, महिलाः एक सांस्कृतिक समीक्षा, एशियाई महिला, महिला और चिकित्सा, महिलाओं के इतिहास की पत्रिका, महिला कला पत्रिका, महिला लेखन तो ये कई पहलू हैं जो किसी के जीवन को बनाने में सबसे महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, और विशेष रूप से महिला विश्वविद्यालय पुस्तकालयों को प्रदान करना चाहिए और इन पहलुओं के बारे में शैक्षिक संसाधनों के साथ–साथ संसाधनों को उपलब्ध कराने पर ध्यान देना चाहिए ताकि हितों/जरूरतों को बनाने/पूरा किया जा सके।

संदर्भ

- मोनसमी, वी एवं कालीमल, पी। (2006)। आई–आईटी एवं एनआईटी एक तुलनात्मक अध्ययन आई एएलआर्डसी बुलेटीन वॉल्यूम 51, (4), पृ।सं। 213–220 ।

- वाईकाडे, एम।आर। (2014)। कैपस के बाहर रहने वाले विद्यार्थियों द्वारा ई–संसाधनों का उपयोगः डेसीडॉक जर्नल ऑफ लाइब्रेरी एण्ड इफोर्येशन टेक्नॉलोजी 2014 वॉल्यूम 36 (6), पृ।सं। 486–490 ।
- सिंह,जोतन (2009)। मणिपुर विश्वविद्यालय में इंटरनेट आधारित ई–संसाधनों पर सर्वे रिर्पोट। ए सर्वे ऑफ एनालाईज लाइब्रेरी एण्ड स्टीडिज ऑफ नेशनल जर्नल वॉल्यूम 52,(1), पृ।सं। 52–57 ।
- आरूप, पी। (2010)। शैक्षणिक संस्थाओं में सूचना और संचार प्रौद्योगिकी के उपयोग का अध्ययनः 110
- कक, सर। अल्वर्ट ।2008)। युगांडा के शैक्षिक एवं अनुसंधान में इलेक्ट्रॉनिक सूचना संसाधनों के उपयोग के बारे में जानकारी का असर : इलेक्ट्रॉनिक लाइब्रेरी जर्नन वॉल्यूम 25 (3), पृ सं 328–334 नवम्बर 2007
- सूमेजोरहो, डेनियल (2006)। डेल्टा राज्य विश्वविद्यालय के प्राध्यापकों का सूचना प्रौद्योगिकी से अवगतता : इलेक्ट्रॉनिक लाइब्रेरी जर्नल वॉल्यूम 24, (5), 706–713 ।
- जुडिथ, सिसाडे, एवं अन्य (2004)। कुवैत विश्वविद्यालय में इलेक्ट्रॉनिक संसाधनों के प्रति जागरूकताः लाइब्रेरी रिव्यू वॉल्यूम 53, पृ सं 526––156
- वीसेंट, एजेंल एवं अन्य (2004)। कवैत विश्वविद्यालय में अकादमी कर्मचारियों द्वारा इलेक्ट्रॉनिक सूचना सेवाओं के बारे में जागरूकताः जर्नल ऑफ डेक्यूमेशंन वॉल्यूम 53, (8), पृ।सं। 401–407 ।।
- गुप्तारीना। (2017)। सशक्त समाज के निर्माण में लाइब्रेरी की अहम भूमिका।
- गुलाटीगजेन्द्र। (2019)। पुस्तकालय में परिवार पढ़नाः सुविधाएँ, विचार और कार्यक्रम।